International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 21-07-2025, Accepted: 20-08-2025, Published: 05-09-2025
Volume 11, Issue 3, 2025, Page No. 69-71

हिंदी कथेतर साहित्य में संस्मरण का भविष्य

ऋचा प्रिया
हिंदी विभाग, ए. पी. सेन गर्ल्स मेमोरियल कॉलेज, लखनऊ विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
आधुनिक हिंदी साहित्य में कथेतर गद्य की यथार्थपरक और कलात्मक विद्या है 'संस्मरण'। इसकी उत्पति 'स्म' धातु में 'सम' उपसर्ग और 'ल्युट' (अण) प्रत्यय के योग से हुई है। जिसका अर्थ है सम्यक अर्थात पूर्णरूपेण स्मरण करना। इसमें 'स्मृति' का महत्वपूर्ण स्थान है। वैसे तो प्राचीन भारतीय साहित्य में बीज रूप में इसकी उपस्थिति पूर्व से सही मेघदूतम्, थैर–थेरी गाथा, जातक कथाओं आदि में मौजूद है, किन्तु साहित्य को स्वतंत्र विद्या के रूप में यह पाश्चात्य साहित्य के प्रभावस्वरूप बीसी शताब्दी के आस–पास अस्तित्व में आती है। अपनी विशिष्ट स्मृतियों को लेखक द्वारा जब सत्यता, तथ्यता, आत्मीयता, रोचकता आदि का ध्यान रखते हुए विशिष्ट भाषा शैली में कलात्मक ढंग से प्रस्तुत किया जाता है, हो तब संस्मरण जैसी विद्या का निर्माण होता है। इसका फलक छोटा। करता है। जितना विस्तृत है, उतना ही इसका कलेवर 'गागर में सागर भरने की उक्ति को व्याख्यायित करता है।
कृत्रिम बुद्धिमत्ता के इस युग में जहाँ लोग अपने समयाभाव को लेकर चिंतित हैं, वहाँ अपनी प्रेरणा के लिए उनका झुकाव जीवनी, आत्मकथा जैसी विस्तृत विधा को छोड़कर संस्मरण की और ही अधिक बढ़ रहा है। आज संस्मरण कथेतर गद्य की सबसे लोकप्रिय विधा है। इसके माध्यम से कम समय में हर क्षेत्र की सत्य घटनाओं की जानकारी प्राप्त की जा सकती है। इसके माध्यम से संस्मरणकार पाठकों को प्रेरित करने के साथ–साथ जागरूक करने का भी कार्य करता है। साथ ही उसके माध्यम से वे लोग भी स्वयं को अभिव्यक्त कर पाते हैं, जिनकी अभिव्यक्ति को देश, समाज, परिवार किसी भी स्तर पर दबाया जाता है। यह लोगों से जुड़ने का सरल और प्रभावशाली माध्यम है। भविष्य में यह विधा और अधिक विस्तार पाकर आत्मकथा, जीवनी, डायरी, रेखाचित्र यात्रा–वृतांत आदि का स्थान ले लेगी। इसके छोटे और उपयोगी रूप को देखकर इसका शताब्दियों तक कथेतर गद्य की लोकप्रिय विधा के रूप में बने रहना सहज संभाव्य है।

मूल शब्दः स्मृति, आत्मीयता, सत्य, मेमॉईर, रिमानिसेंसेज

हिंदी गद्य की आधुनिक एवं महत्वपूर्ण विधा है संस्मरण।
इसका कलेवर छोटा होने के साथ–साथ कलात्मक और आकर्षक है। सत्यता, तथ्यता तो इसके लिए आवश्यक है ही साथ ही आत्मीयता के विद्यमान रहने से यह रोचक और पाठकों के मर्म को स्पर्श करने वाली विशिष्ट विधा भी है। यह मूलतः स्मृति पर आधारित है। ऐसी स्मृति जो संस्मरणकार के स्मृतिपटल पर सदा–सदा के लिए अंकित हो गयी हो और यादों की जुगाली [1] के दौरान बार–बार लेखक को लेखनी उठाने को मजबूर करती हो। यह जीवन के विशिष्ट क्षणों को पुर्नसृजित करने का एक माध्यम है। संस्मरण शब्द की व्युत्पत्ति 'स्म' धातु में 'सम' उपसर्ग तथा 'ल्युट' (अण) प्रत्यय के योग से हुई है, जिसका अर्थ है– सम्यक अर्थात संपूर्ण रूप से स्मरण करना। [2]

सम् (उपसर्ग) + स्म (धातु) + ल्युट (प्रत्यय) = संस्मरण

अधिकांश विद्वानों का मानना है कि संस्मरण का गद्य साहित्य की विधा के रूप में उद्भव पाश्चात्य साहित्य के प्रभाव स्वरूप हुआ है। संस्मरण लेखक यदि स्वयं अपने विषय में लिखे तो उसे 'रेमिनिसेंसेज' कहा जाता है, जो आत्मकधा के अधिक निकट है और लेखक यदि अन्य व्यक्तियों के विषय में लिखे तो उसे 'मेमॉइर' कहा जाता है, जो जीवनी से अधिक निकटता रखता है। [3] किन्तु यदि ग़ौर किया जाए तो भारतीय साहित्य में इसके बीज प्रारंभ से मौजूद रहे हैं। संस्कृत साहित्य से लेकर आधुनिक साहित्य तक में इसके तत्त्व देखने को मिलते हैं। संस्कृत महाकाव्यों, जातक कथाओं, बौद्ध साहित्य, जैन साहित्य सभी में इसके तत्त्व को देखा जा सकता है। कालिदास कृत 'मेघदूतम' जैसा काव्य जो संपूर्ण विश्व में प्रसिद्धि पा चुका है, उनके द्वारा अपनी प्रेयसी की स्मृति में लिखा गया है। धनपाल कृत 'बृहत्कथा' में यात्रा का वर्णन किया गया है जिससे स्पष्ट होता है कि उस समय भी 'यात्रा संस्मरण' के तत्त्व विद्यमान थे। बौद्ध भिक्षुओं और भिक्षुणियों द्वारा लिखित देर तथा थेरीगाथा में भी स्मृति की प्रधानता देखी जा सकती है। आधुनिक काल में लिखे गए काव्यों में भी स्मरण का उपयोग किया गया है जिसका उदाहरण निराला कृत 'सरोज स्मृति' है।
उन्नीसवीं शताब्दी में कोलकता में फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना से आधुनिक गद्य के विकास की नींव रखी गयी। प्रारंभ में अनुवाद पर अधिक बल दिया गया जिससे भारतीय के साथ–साथ पाश्चात्य साहित्य की भी अनेक प्रसिद्ध रचनाओं का अनुवाद हिंदी में उपलब्ध हुआ। इसके साथ ही गद्य लेखन ने भी धीरे–धीरे अपना अस्तित्व बनाना प्रारंभ किया। भारतेन्दु युग तक आते–आते हिन्दी गद्य ने अपना स्वरूप धारण कर लिया। जो इस युग की सबसे बड़ी आपलब्धि मानी जा सकती है। इस युग में सहित्य के क्षेत्र में अनेक नवीन प्रयोग हुए जो पाश्चात्य साहित्य का गंभीरतापूर्वक अध्ययन करने के परिणामस्वरूप ही संभव हुआ। अनेक नयी विधाओं के साथ संस्मरण का भी इसी गुग में उद्भव हुआ। जिसे द्विवेदी युग में विकसित होने का अवसर प्राप्त हुआ और छायावाद युग तक आते–आते यह एक स्वतंत्र विधा के रूप में स्थापित हो गयी । साहित्यकारों की नई पीढ़ी सभी रूढ़ियों को तोड़कर कुछ नया सृजित करने की ओर अग्रसर हुई। जिसके परिणामस्वरूप नए वाद, नयी अवधारणाएँ विकसित होने लगीं जिसने साहित्य में क्रांति का रूप धारण कर लिया।[4]
आधुनिक युग में गद्य का विकास इस रफ्तार में हुआ कि उसने पद्य को भी पूर्ण रूप से प्रभावित कर दिया। धीरे–धीरे पद्य का सृजन गद्यात्मक रूप में होने लगा। जिसका कारण था गद्य का अभिव्यक्ति के श्रेष्ठ माध्यम के रूप में सामने आना। संस्मरण का भी विकास उसी क्रम में हुआ। यह लेखक की स्मृति से जुड़ा आख्यान है। प्रसिद्ध संस्मरणकार महादेवी वर्मा संस्मरण को परिभाषित करती हुई लिखती हैं– "संस्मरण अपनी स्मृति के आधारों पर समय की धूल पोंछ कर उन्हें अपने मनोजगत के

निभृत कक्ष में बैठाकर उनके साथ जीवित रहते और अपने आत्मीय संबंधों को पुनः जीवित करते हैं, इस स्मृति मिलन में मानो हमारा मन बार–बार दोहराता है हमें आज भी तुम्हारा अभाव है। [5]

प्रत्येक मनुष्य अपने जीवनकाल में बहुत–से लोगों से मिलता है, बहुत– सी जगहों पर यात्रा करता है, बहुत–सी घटनाओं का प्रत्यक्षदर्शी होता है, उनसे जुड़ी बहुत–सी ऐसी स्मृतियाँ होती हैं, जो उनके स्मृतिपटल पर सदा के लिए अंकित हो जाती हैं। उन्हें वे अपने से जुड़े अनेक लोगों के बीच साझा करता है। उनमें से कुछ मनुष्य ऐसे होते हैं जो यह निश्चय कर पाते हैं कि उन स्मृतियों को रूप देकर सबके सामने रखा जाए, जिससे सभी प्रेरणा ग्रहण करें। वे कुछ लोग साहित्य में संस्मरणकार के रूप में प्रसिद्ध हैं। इस संबंध में अरुण प्रकाश अपनी पुस्तक गद्य की पहचान' में लिखते हैं–

"हर संस्मरण में अनुभव कथाएँ भी होती हैं। अनुभव कथाओं का सजीव चित्रण कर संस्मरण लेखक पाठक को उसी अनुभव बोध से गुजारना चाहता है। यह अनुभव चित्रण जितना खाँटी, जितना अनगढ़ होता है, उतना ही मौलिक और अनूठा लगता है। अनुभव हर किसी के पास होता है, लेकिन अनूठापन सब का अलग–अलग होता है।

वैसे तो स्मृतियों का कोई तारतम्य नहीं होता है कभी न बचपन से बुढ़ापे में पहुंच जाती है तो कभी बुढापे से शैशवावस्था में। इस संबंध में ममता कालिया लिखती हैं– "यादें कभी सिलसिलेवार नहीं आतीं। यादों को कतार बनाना किसी ने सिखाया ही नहीं। वे अर्र–र्र–र्र–धम की तरह उतरती हैं, एक दूसरी से रगड़ खाती, कंधे छीलतीं। वे गुत्थमगुत्था हो जाती हैं। दिमाग के डीप फ्रीज में कम्बख़त सब की सब ताजा, जिन्दा और धड़कती हुई। जरा–सा सोच का सेंक लगा नहीं कि लगी इठलाने।"[7] गद्य की अन्य विधाओं की तरह ही संस्मरण के भी कुछ तत्व होते हैं। एक विधा के रूप में इसका अपना अलग स्वरूप है। जिसके लिए कुछ प्रमुख तत्व निर्धारित किये गए हैं, जिसमें आत्मीयता, विशिष्ट स्मृति, अभिव्यक्ति कौशल, सत्यता, तथ्यता आदि महत्त्वपूर्ण है।

'संस्मरण' में जिस व्यक्ति, घटना, यात्रा आदि का वर्णन किया जाता है, उसका संस्मरणकार की आत्मीयता से जुड़ा होना, संस्मरण को रोचक और प्रभावशाली बनाता है। जब तक लेखक आत्मीयता के साथ किसी स्मृति को अंकित नहीं करेगा, तब तक संस्मरण विधा आकार नहीं पा सकती। इसके साथ ही आवश्यक है संस्मरण्य व्यक्ति के प्रति आत्मीगता और श्रद्धा का भाव। श्रद्धा–पुरुष वही होगा, जो कोई प्रेरणा दे सके। अपने कार्यों से, अपने व्यक्तित्व से, मानवीय गुणों के प्रसार से। ऐसे श्रद्धास्पद व्यक्ति के साथ लेखक के अंतरंगता होनी चाहिए। [8]

संस्मरण का सबसे महत्त्वपूर्ण तत्व है स्मृति'। स्मृति के आधार पर ही संस्मरण जैसी विधा का पूरा अस्तित्व निर्मित होता है। वह स्मृति चाहे किसी सामान्य व्यक्ति या घटना से जुड़ी हो अथवा किसी विशिष्ट व्यक्ति या घटना से। जो संस्मरणकार के स्मृतिपटल पर हमेशा के लिए अंकित हो जाता है वह विशिष्ट हो जाता है क्योंकि निश्चय ही वे उस व्यक्ति या घटना से प्रभावित होते हैं। डॉ० पुष्पा बंसल इस विषय में लिखती है– "अपनी जीवन–यात्रा के क्रम में व्यक्ति अनेक अनुभवों में से होकर गुजरता है, जिनकी कोई–न–कोई छाप उसके स्मृति कोश में स्वयमेव ही बन जाया करती है। उनमें से कुछ प्रसंग, व्यक्ति, घटनायें, स्थितियां व दृश्य ऐसे होते हैं जो सामान्यतः अतिक्रमण करते हैं। जो भोक्ता पर अपने वैचित्र्य व वैशिष्ट्य से एक गहरा प्रभाव बनाते हैं। भोक्ता व्यक्ति का मानस अपने शून्य व आत्मान्वेक्षक क्षणों में बार–बार उन्हीं प्रभावों को अनुभव किया करता है– इसी प्रक्रिया में वह किसी क्षण यह निर्णय ले लेता है कि इस अनुभव–स्रोत को अपने तक ही सीमित रखने के स्थान पर इसे भाषा में अभिव्यक्त करके जनसुलभ बना दिया जाए। [9]

साहित्य की किसी भी विधा को अभिव्यक्ति के विशिष्ट तरीके ये ही कलालाक और आकर्षक बनाया जा सकता है। भाव तो सभी व्यक्ति के पास होते हैं किन्तु उसे अभिव्यक्त बहुत कम लोग ही कर पाते हैं। संस्मरणकार में अभिव्यक्ति का विशिष्ट कौशल विद्यमान होना आवश्यक है क्योंकि यह संस्मरण का प्रमुख तत्व है। अपनी अभिव्यक्ति कौशल के द्वारा ही महादेवी वर्मा श्रेष्ठ संस्मरणकारों में स्थान रखती हैं। डॉ० कृष्णकुमार शर्मा के अनुसार– "अनुभूति की कलात्मक अभिव्यक्ति कला के माध्यम से संस्मरण होता है। संस्मरण यथार्थ होता है। इसमें संस्मरणकार के वे क्षण होते हैं, जो उसने स्वयं जिये हैं।" [10]

'संस्मरण' एक ऐसी विधा है जिसमें विश्वसनीयता बनाए रखने के लिए संस्मरणकार द्वारा सत्य घटना का ही वर्णन किया जाना आवश्यक है। लेखक किसी व्यक्ति से अत्यधिक प्रभावित होकर अतिश्योक्तिपूर्ण वर्णन नहीं कर सकता। उसकी तटस्थता संपूर्ण रचना में आवश्यक है। इस तथ्य को संदीप लोटलीकर का कथन स्पष्ट करता है– "संस्मरण लेखक को निष्पक्ष तथा निर्दोष भाव से संस्मरणीय व्यक्ति का विवेचन करना चाहिए । जहाँ तक व्यक्ति के गुणों का प्रश्न है, उनका विवेचन आवश्यक है, इसी बुनियाद पर संस्मरण साहित्य का भवन खड़ा है। परन्तु साथ में यह भी जरूरी है कि लेखक उस व्यक्ति के दोषों का की यथा सम्भव वर्णन करे। क्योंकि दोषों से बचते हुए लेखक किसी व्यक्ति के गुणों का ही बखान करता चलेगा तो उसकी रचना संदेह के घेरे में आ सकती है। रचना की प्रमाणिकता पर संदेह के बादल मंडरा सकते हैं। ऐसी रचना उच्च कोटी की रचना नहीं कही जा सकती।"[11]

कथेतर गय की सभी विधाओं में तथ्यात्मकता का ध्यान रखना होता है ताकि उसकी प्रमाणिकता बनी रहे। संस्मरण का संबंध स्मृति से है और वह किसी व्यक्ति, घटना अथवा इतिहास से जुड़ी हो सकती है। ऐतिहासिक विवरण में तथ्यात्मकता का होना अत्यावश्यक है। इस विषय में अरुण प्रकाश लिखते हैं– "संस्मरण में तथ्य और सूचनाओं के उचित प्रतिपादन का कारक भी महत्वपूर्ण है। अधूरे, असत्य तथ्य संस्मरण को अविश्वसनीय ही नहीं बनाते बल्कि संस्मरण लेखक को मुकदमा, मानहानि, जुर्माना, जेल तक रू–ब–रू करा सकते हैं। [12]

हिन्दी साहित्य में इस विधा की शुरुआत द्विवेदी युगीन पुत्र–पत्रिकाओं के माना जा सकता है। पहले संस्मरण लेखक के रूप में विद्वानों द्वारा बालमुकुंद गुप्त का नाम लिया जाता है। जिनके द्वारा हिन्दी के रचित 'निज– वृतांत' प्रथम संस्मरण के रूप में उल्लेखनीय है। हिन्दी की अनेक पत्रिकाएं जैसे सरस्वती, चाँद, हंस, इंदु, विशाल भारत आदि ने संस्मरण के विकास में अहम भूमिका निभायी है। इस युग के प्रमुख संस्मरणकारों में बालमुकुंद गुप्त, रामदास गौड, रामनाथ सुमन, इलाचंद जोशी, इंद्रविद्यावाचस्पति, पद्म सिंह शर्मा, शिव पूजन सहाय, बनारसी दास चतुर्वेदी, महादेवी वर्मा, शिवरानी देवी, राहुल सांकृत्यायन, काका कालेलकर, बाबू गुलाब राय, उपेन्द्रनाम अश्क, माखनलाल चतुर्वेदी, रामवृक्ष बेनीपुरी, श्रीराम शर्मा, राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह आदि अपना विशेष स्थान रखते हैं। [13]

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात का समय भारतीय विद्वानों के लिए साहित्यिक उपलब्धियों के उत्कर्ष का समय रहा। मानसिक से स्वतंत्र होकर अनेक नए क्षेत्रों में नए प्रयोग किये जाने लगे। जिससे सभी विधाओ के साथ संस्मरण लेखन में भी बदलाव आये। ये स्पष्ट और अधिक कलात्मक रूप में हमारे सामने आए। इक्कीसवीं सदी आते– आते यह विधा के रूप में अत्यधिक प्रसिद्ध और स्वतंत्र हो गया। अरुण प्रकाश के शब्दों में कहा जाए तो– "आजकल हिंदी साहित्य में संस्मरणों की बहार है।"[14] इसका क्षेत्र इतना विस्तृत है कि इसमें विषयों की भरमार है। इस सदी के प्रमुख संस्मरणकारों में रामदरश मिश्र, विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, विद्यानिवास मिश्र, मनोहर श्याम जोशी, कांति कुमार जैन, विष्णु प्रभाकर, डॉ. विवेकी राय, विश्वनाथ त्रिपाठी, ओम थानवी, रामशरण जोशी, काशीनाथ सिंह, ममता कालिया, निर्मला जैन, नरेंद्र कोहली, राजेश जोशी, कृष्ण सोबती, गोविंद मिश्र, मैत्रेयी

पुष्पा, कन्हैयालाल नंदन, अचला नागर, चंद्रकांता, पुष्प भारती, पद्मा सचदेव, उषा महाजन आदि उल्लेखनीय हैं।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के इस युग में जहां लोगों में समय के अभाव में तकनीकि निर्भरता बढ़ गयी है वहीं अच्छी–अच्छी रचनाओं वे दूरियां भी बढ़ गयी है। लोग अपनी व्यस्त दिनचर्या में घर से ऑफिस तक और ऑफिस से घर तक जाने के बीच ही कभी समय निकाल कर अपने पढ़ने का शौक पूरा करने को अभिशप्त हैं। इतने कम समय में जीवनी, आत्मकथा जैसी विस्तृत रचनाएँ पढ़ने की जगह उनकी रूचि छोटे कलेवर की उन रचनाओं की ओर अधिक बढ़ रही है जो थोड़े में ज्यादा देने का सामर्थ्य रखती है। उनमें से ही संस्मरण का भी स्थान आता है। यही कारण है कि आज संस्मरण लेखन में वृद्धि हो रही है। डॉ बापूराव देसाई के शब्दों में– "आज साहित्य में मानव मन की अभिव्यक्ति कथन करने के लिए संस्मरण ही एकमेव संघर्षी, समाज सुधारक, ईमानदार और भविष्य कल्पक विधा रह गई है। संस्मरण संक्षेप में नाविक की तीर की भांति अपना मन्तव्य प्रकर करता है, जबकि साहित्य की अन्य सभी विधाएं कल्पना प्रचुरता से सपनों के जगत् में जाकर यथार्थ से मुँह मोडने को प्रेरणा तथा कभी–कभी पलायन करती हैं। संस्मरण विधा में इतनी व्यापकता है कि वह किसी व्यक्ति के निजी व्यवहार से लेकर अंतरराष्ट्रीय स्तर के विषयों में जाकर जन जागृति करता है। संस्मरण राजनीति तथा सामाजिक रूढ़ियों, धार्मिक आडंबर के प्रति सामान्य पाठकों को जागरूक करता है, अतः वह प्रियतर होता है।" [15]

वर्तमान परिदृश्य को देखते हुए 'संस्मरण' का लिखा जाना अत्यंत आवश्यक जान पड़ता है। जन–जागृति के लिए, भूमंडलीकरण और भष्टाचार को जड़ से निर्मूल करने के लिए कल्पनाशील साहित्य से अधिक सशक्त हथियार है यथार्थपरक साहित्य जिसमें सभी क्षेत्रों का यथार्थ रूप हमारे उपस्थित करने की शक्ति मौजूद है। आज मीडिया भी सही खबरों को सही ढंग से पेश करने से कतराती है, उसे भी चटपटी चीजें पेश कर जनता को गुमराह करने की आदत हो गयी है। इस तरह में संस्मरण लेखन किसी भी विषय से जुड़े मनुष्य को कम शब्दों में अपना सत्य प्रकट करने का माध्यम प्रदान करती है।

काव्य लेखन हर किसी के बस की बात नहीं कुछ विशिष्ट लोग ही कवि बन पाते हैं, किन्तु भाषा का ज्ञान रखने वाला हर व्यक्ति संस्मरण लेखन कर सकता है। जेल जाने वाला हर कैदी बेशक कोई–न–कोई गुनाह किये रहता है लेकिन उसकी परिस्थितियाँ अलग– अलग होती है। वहाँ के कैदियों के द्वारा लिखा जाने वाला संस्मरण वैसे लोगों के लिए मार्गदर्शक हो सकता है जो कुमार्ग पर चल रहा है। बड़े–बडे संत, महात्माओं की जीवनियाँ लिखी जाती है जिसमें सत्यता के साथ–साथ चमत्कार को भी घुला–मिला दिया जाता है। ऐसे में यदि वे स्वयं संस्मरण के रूप में दो चार लेख लिखकर स्वयं को अभिव्यक्त करेंगे तो वह समाज के लिए अत्यधिक फायदेमंद होगा। बडे–बडे उद्योगपति जिनके पास समय का अभाव होता है वे जनता को प्रेरित करने के लिए आत्मकथा की जगह संस्मरण लेखन को प्राथमिकता प्रदान कर सकते हैं। जिससे आने वाली अगली पीढी को प्रेरणा मिले। वे छात्र जो ऊँचे– ऊंचे पदों पर पहुंचते हैं उनके द्वारा लिखा गया संस्मरण अगली पीढ़ी के छात्रों का मार्ग प्रशस्त करता है।

संस्मरण जैसी विधा का कभी अंत नहीं होगा क्योंकि यह प्रत्येक लेखक की रचनाओं में किसी–न–किसी रूप में मौजूद रहेगा। इसकी प्रसिद्धि इस बात की ओर संकेत करती है कि आज यह कथेतर हिंदी गद्य की सबसे लोकप्रिय विधा है। जो भविष्य में आत्मकथा, जीवनी, रेखाचित्र, यात्रा–वृतांत सभी का स्थान लेने वाली है। इन सभी विधाओं को अपने में समाहित करते हुए यह आगे के कई दशकों तक अपनी लोकप्रियता बनाए रखने वाली है।

अतः यह कहा जा सकता है कि संस्मरण कथेतर गद्य साहित्य की एक ऐसी विधा है जिसमें आत्मीयता, सत्यता, तथ्यता, रोचकता, कलात्मकता जैसे तत्वों की मौजूदगी के कारण यह आज सबसे लोकप्रिय और प्रभावशाली है। यह भविष्य में इतनी विकसित विधा के रूप में अपना अस्तित्व बनाएगी कि कथेतर गद्य की अधिकांश विधाएं इसका हिस्सा बन जाएगी। इसकी उपयोगिता को देखते हुए कहा जा सकता है कि इस विधा का भविष्य उज्ज्वल है, क्योंकि यह मानव जीवन के अनुभवों, भावनाओं और स्मृतियों को अभिव्यक्ति प्रदान करने का एक अनूठा माध्यम है, जो पाठकों को लेखक के साथ भावनात्मक रूप में जुड़ने में मदद करता है।

संदर्भ सूची

1. भारती पुष्पा (2024), यादें, यादें और यादें!, प्रभात प्रकाशन, पृ–87
2. शंकर विवेक (2017), साहित्यशास्त्र, राजस्थान हिंदी अकादमी, पृ–138
3. वही पृ – 138
4. शर्मा डॉ. मनोरमा (1988), संस्मरण और संस्मरणकार, आराधना ब्रदर्स, पृ–10
5. 'प्रेमी' गंगा सहाय (2021), भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र, हरीश प्रकाशन मंदिर, पृ–92
6. प्रकाश अरुण(2012), गद्य की पहचान, अंतिका प्रकाशन, पृ–161
7. कालिया ममता (2022), कितने शहरों में कितनी बार, राजकमल प्रकाशन, पृ–6
8. डॉ. हरिमोहन (2019), साहित्यिक विधाएं रूपुनर्विचार, वाणी प्रकाशन, पृ–241
9. बंसल पुष्पा (2019), उद्धृत साहित्यिक विधाएं पुनर्विचार, डॉ. हरिमोहन, वाणी प्रकाशन, पृ–240
10. डॉ. आशाकुमारी (1988), बिहार का संस्मरण साहित्य, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी, पृ–3 (उद्धृत साहित्य संदेश)
11. लोटलीकर संदीप (2005), काशीनाथ सिंह का संस्मरण साहित्य, कानपुर विद्या
12. प्रकाश अरुण (2012), गद्य की पहचान, अंतिका प्रकाशन, पृ–161
13. डॉ. आशाकुमारी (1988), बिहार का संस्मरण साहित्य, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी, पृ–30
14. प्रकाश अरुण (2012), गद्य की पहचान, अंतिका प्रकाशन, पृ–149
15. देसाई डॉ. बापूराव (2018), संस्मरण साहित्य विधारू शास्त्र और इतिहास, पराग प्रकाशन, पृ–158